Toppersnotes®
Unleash the topper in you

राजस्थान – पटवार

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड

भाग – 4

राजस्थान का सामान्य अध्ययन

SIERRA
INNOVATIONS

RAJASTHAN PATWAR

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति	
1.	राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत	**1**
2.	राजस्थान के पुरातात्विक स्थल	**12**
3.	प्रमुख राजवंश – मेवाड़ का इतिहास	**19**
4.	राठौड़ राजवंश और मारवाड़ का इतिहास	**34**
5.	चौहानों का इतिहास	**45**
6.	आमेर का इतिहास (कच्छवाहा वंश)	**57**
7.	राजस्थान और 1857 का विद्रोह	**67**
8.	राजस्थान में किसान आंदोलन	**74**
9.	राजस्थान में जनजातीय आंदोलन	**81**
10.	राजस्थान में राजनीतिक जागृति	**84**
11.	प्रजामंडल आंदोलन	**92**
12.	राजस्थान का राजनीतिक एकीकरण	**99**
13.	राजस्थान स्थापत्य एवं शिल्प कला	**104**
14.	राजस्थान की चित्रकला एवं लोक कला	**124**
15.	राजस्थान के हस्तशिल्प	**136**
16.	लोक गीत एवं वाद्य यंत्र	**142**
17.	राजस्थान के लोक नृत्य	**153**
18.	राजस्थान के लोक नाट्य	**160**
19.	राजस्थान के संत और लोक देवी – देवता	**164**
20.	राजस्थानी भाषा एवं साहित्य	**180**
	राजस्थान का भूगोल	
1.	राजस्थान की प्रमुख भौतिक भू–आकृतियाँ	**194**
2.	प्रमुख नदियाँ एवं झीलें	**203**
3.	राजस्थान की जलवायु	**222**
4.	राजस्थान में मृदा	**233**
5.	वन संसाधन एवं वनस्पति	**237**
6.	राजस्थान की जनसंख्या	**243**
7.	मरुस्थलीकरण,सुखा एवं अकाल तथा विकास परियोजनाएं	**250**
	राजस्थान की अर्थव्यवस्था	
1.	राजस्थान में खनिज सम्पदा	**253**
2.	ऊर्जा संसाधन	**268**

3.	प्रमुख उद्योग	**279**
4.	राजस्थान में गरीबी व बेरोजगारी	**286**
5.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	**291**
6.	विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)	**296**
7.	सरकार की प्रमुख कल्याणकारी योजनाएँ	**301**

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

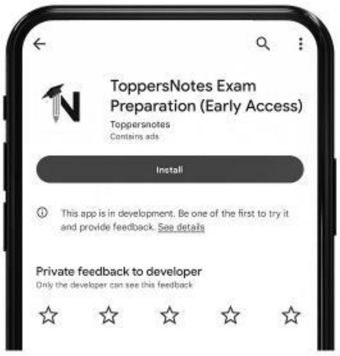

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से।

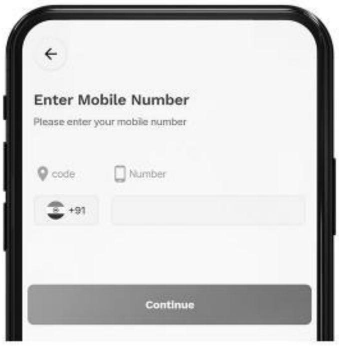

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें।

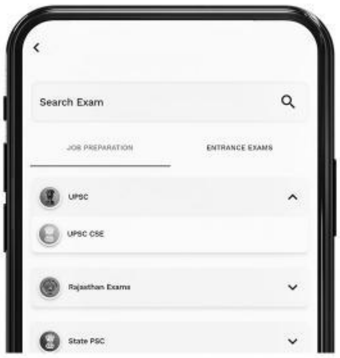

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें।

सर्च बटन पर क्लिक करें।

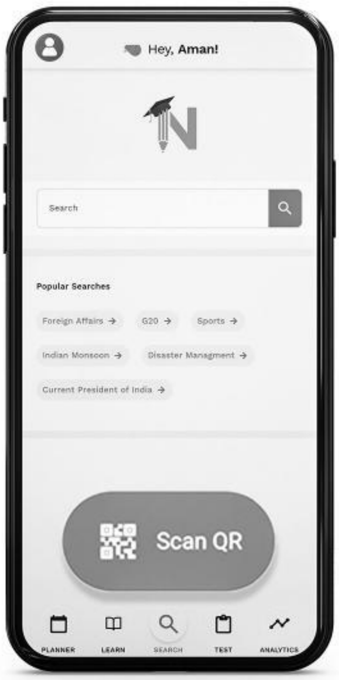

SCAN QR पर क्लिक करें।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें।

- सोल्युशन वीडियो
- डाउट वीडियो
- कॉन्सेप्ट वीडियो

- अतिरिक्त पाठ्य-सामग्री

- विषयवार अभ्यास
- कमजोर टॉपिक विश्लेषण

- रैंक प्रेडिक्टर
- टेस्ट प्रैक्टिस

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए
hello@toppersnotes.com पर मेल करें
या **766 56 41 122** पर whatsapp करें।

1 CHAPTER

राजस्थान के इतिहास के प्रमुख स्रोत

- **इतिहास के जनक** - यूनान के हेरोडोटस
  - इन्होंने 2500 वर्ष पूर्व **हिस्टोरिका** नामक **ग्रन्थ** की रचना की ।
  - **भारत** का **उल्लेख** भी किया ।
- **भारतीय इतिहास के जनक** - वेद व्यास
  - **महाभारत** की रचना की थी ।
  - महाभारत का **प्राचीन नाम** - जय संहिता
- **राजस्थान इतिहास के जनक** - कर्नल जेम्स टॉड ।
  - वर्ष 1818 से 1821 के मध्य **मेवाड़** (उदयपुर) प्रांत के **पोलिटिकल एजेन्ट** थे ।
  - **घोडे** पर **घूम**-घूम कर **राजस्थान इतिहास** को लिखा ।
    - अतः **घोडे वाले बाबा** भी कहे जाते है ।
  - **एनल्स एण्ड एंटीक्वीटीज ऑफ़ राजस्थान/ सेन्ट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट ऑफ इंडिया** - लन्दन में 1829 में प्रकाशन ।
  - गौरी शंकर हीराचन्द ओझा (जी.एच. ओझा) - **सर्वप्रथम हिन्दी अनुवाद** ।
  - **अन्य पुस्तक** - ट्रेवल इन वेस्टर्न इण्डिया
  - **मृत्यु पश्चात** 1837 में पत्नी द्वारा **प्रकाशन** ।

पुरातात्विक स्रोत

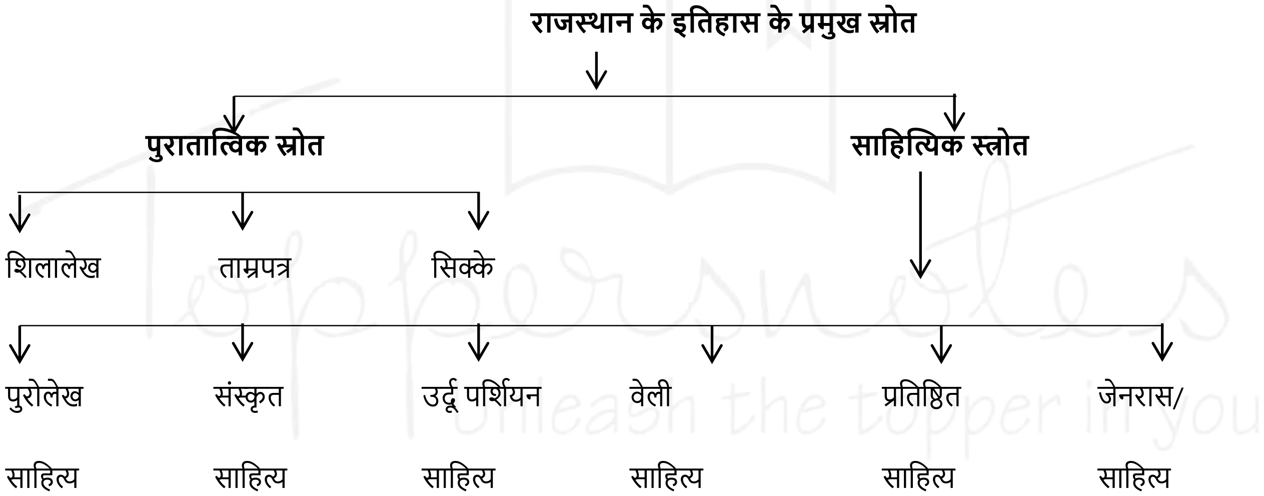

शिलालेख

रायसिंह प्रशस्ति (बीकानेर 1594)	• प्रशास्तिकार- जैन मुनि जैता। • इसमें राव बिका से लेकर राव रायसिंह तक के बीकानेर के शासकों की उपलब्धियों का वर्णन है । • इसके अनुसार बीकानेर दुर्ग का निर्माण 30 जनवरी 1589 से 1594 तक राव रायसिंह ने अपने मंत्री करमचंद द्वारा पूरा करवाया था।
मंडौर अभिलेख (837 ई में जोधपुर)	• यह गुर्जर नरेश बाउक की प्रशस्ति है।
	• इस में गुर्जर प्रतिहारों की वंशावली, विष्णु एवं शिव पूजा का उल्लेख किया गया है।
सच्चिया माता की प्रशस्ति (1179 ओसिया ,जोधपुर(	• यह ई. का है। • सच्चिया माता का मंदिर, में उत्कीर्ण किया गया है। • इसमें कल्हण को महाराजा एवं कीर्तिपाल को मांडव्यपुर का अधिपति बताया गया है।
बिजौलिया शिलालेख	• 1170 ईमें इसे बिजौलिया . कस्बे के पार्श्वनाथ मन्दिर परिसर की एक बड़ी चट्टान पर संस्कृत में उत्कीर्ण किया गया।

	• इस अभिलेख की स्थापना जैन **श्रावक लोलक द्वारा** करवाई गई थी तथा इसके लेखक **कायस्थ केशव** थे। • रचयिता- गुणभद्र। • इसमें सांभर व अजमेर चौहानों को **वत्सगोत्रीय ब्राह्मण बताते** हुए वंशावली दी गई है। • विग्रह राज चतुर्थ का दिल्ली पर अधिकार बताया है
बसंतगढ़ अभिलेख (625ई. सिरोही)	• यह बसंतगढ़ के (सिरोही) माता मंदिर (खिमेल) क्षेमकरी से प्राप्त हुआ है। • वर्तमान में यह अजमेर के राजपूताना म्यूज़ियम में सुरक्षित है। • यह अर्बुद देश के राजा वर्मलात के सामंत राज्जिल तथा राज्जिल के पिता वज्रभट्ट का वर्णन (सत्याश्रय) करता है। • इस अभिलेख में राजस्थान शब्द का प्राचीनतम प्रयोग **'राजस्थानीयादित्य' के रूप में किया गया है।**
चिरवे का अभिलेख (1273 ई. \ वि.सं. 1330 उदयपुर)	• यह 1273 ई का है • **प्रशस्तकार** – रत्नप्रभ सूरी • **इसके शिल्पी** – देल्हण • इस पर 36 पंक्तियों में 51 श्लोक देवनागरी लिपि और **संस्कृत भाषा** में लिखे गए है। • गुहिल वंशीय बप्पा के वंशधर पदम सिंह, जैत्र सिंह, तेज सिंह और समर सिंह की उपलब्धियो का उल्लेख • एकलिंगजी के अधिष्ठाता पाशुपत योगियों के अग्रणी शिवराशि का भी वर्णन किया गया है।
अपराजित का शिलालेख	• 661 ईमें उदयपुर जिले के . नागदे गाँव के निकट कुंडेश्वर मंदिर की दीवार पर अंकित किया गया। • रचयिता - दामोदर था।

	• 7वीं सदी के मेवाड़ के इतिहास की जानकारी।
सामोली अभिलेख (उदयपुर)	• यह अभिलेख 646 ईका है। . • 5वां राजा के समय का अभिलेख है, जो संस्कृत भाषा और कुटिल लिपि में लिखा गया है। • इसके अनुसार वटनगर से आये हुए महाजन (सिरोही) समुदाय के मुखिया**अंतक महत्तर** ने अरण्यवासिनी देवी जावर माता का)) मंदिर बनवाया था। • जैतक महत्तर ने 'बुक' नामक सिद्धस्थान पर अग्नि समाधि ले ली। • यह अभिलेख जावर के निकट अरण्यगिरी में तांबे व जस्ते के खनन उद्योग की जानकारी देता है।
आमेर का लेख	• निर्माण - 1612 ई. में • इसमें कछवाहा वंश को **रघुवंशतिलक"'** कहकर संबोधित किया गया है। • इसमें पृथ्वीराज एवं उसके पुत्र भगवानदास और उसके पुत्र महाराजधिराज मानसिंह के नाम क्रम से दिए गए हैं। •
भाब्रू शिलालेख	• यहाँ अशोक मौर्य के 2 शिलालेख मिले हैं आबू शिलालेख और बैराठ शिलालेख • यह 1837 में "बीजक की पहाड़ी से कैप्टन बर्ट द्वारा खोजा गया था। • वर्तमान में यह कलकता संग्रहालय में रखा है • जिसकी वजह से इसे कलकत्ता-वैराठ लेख कहा जाता है। • इससे अशोक के बुद्ध धर्म का अनुयायी होना सिद्ध होता है। • इसे मौर्य सम्राट अशोक ने स्वयं उत्कीर्ण करवाया था

घोसुण्डी शिलालेख (RAS Pre 2016)	• सर्वाधिक प्राचीन अभिलेख | • द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व , घोसुण्डी ,चित्तौडगढ़ से प्राप्त हुआ • भाषा -संस्कृत, लिपि- ब्राह्मी | • सर्वप्रथम डी आर भंडारकर द्वारा पढ़ा गया | • **वैष्णव या भागवत** संप्रदाय से संबंधित • कई शिलाखण्डों में टूटा हुआ | • एक बड़ा खण्ड उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित | • अश्वमेध यज्ञ करने और विष्णु मंदिर की चारदीवारी बनवाने का वर्णन है।
नगरी का शिलालेख	• काल 200-150 ई.पू. • ब्राह्मी लिपि में संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण किया गया है। • इसकी लिपि घोसुण्डी के लेख से मिलती है • घोसुण्डी शिलालेख नगरी शिलालेख में जुड़वा अभिलेख | • राजस्थान वर्तमान में राजस्थान के उदयपुर संग्रहालय में स्थित
मानमोरी का शिलालेख (सन 713 ई.)	• मौर्य वंश से सम्बंधित यह लेख **चितौड़ के पास मानसरोवर** झील के तट से कर्नल टॉड को मिला था। • इसका प्रशास्तिकार **नागभट्ट का पुत्र पुष्य** है और उत्कीर्णक करुण का पौत्र **शिवादित्य** है। • चित्रांगद मौर्य का उल्लेख है जिसने चितौड़गढ़ का निर्माण करवाया। • अमृत मंथन की कथा का उल्लेख किया गया है। • कर्नल जेम्स टॉड ने इसे इंग्लैंड ले जाते समय असंतुलन की वजह से समुद्र में फेंक दिया था। इसमें भीम को अवन्तिपुर का राजा बताया है।

राज प्रशस्ति (1676 ई./वि.स. 1732)	• प्रशस्तिकार- रणछोड़भट्ट तैलंग • महाराणा राजसिंह सिसोदिया के समय स्थापित करवाया गया था। • यह राजसमन्द झील की 9 चौकी की पाल पर 25 श्लोकों में उत्कीर्ण विश्व की सबसे बड़ी प्रशस्ति है। • इसमें बापा रावल से लेकर राणा जगतसिंह द्वितीय तक की गुहिलों की वंशावली है। • इसमें महाराणा अमरसिंह द्वारा की गई **मुगल मेवाड संधि** का वर्णन है।
कुम्भलगढ़ शिलालेख (1460 ई.)	• 1460 ई के आसपास कुम्भलगढ़ में प्राप्त हुई। • प्रशास्तिकार उत्कीर्णक /- कवि महेश • राजस्थान के राजसमंद जिले के कुम्भलगढ़ दुर्ग में स्थित कुम्भश्याम मंदिर में स्थित 5 शिलाओं में उत्कीर्ण है। • इसमें प्रयुक्त **भाषा संस्कृत** और **लिपि देव नागरी** है। • इसमें गुहिल वंश और उनकी उपलब्धियों का वर्णन है। • इसमें बापा रावल को **विप्रवंशीय** बताया गया है। • इसमें हम्मीर का चेलावाट जीतने का वर्णन है और **उसे विषमघाटी पंचानन** कहा गया है। • उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित है • इसमें मेवाड़ की तत्कालीन भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक स्थति की जानकारी मिलती है
कीर्तिस्तंभ प्रशस्ति(1460 ई.)	• **प्रशस्तिकार**- महेश भट्ट • **रचयिता**- अत्रि और महेश • यह राणा कुम्भा की प्रशस्ति है। • गुहिल वंश के बप्पा रावल से लेकर कुम्भा तक की विस्तृत

	• जीवनी का वर्णन किया गया है। • इसमें कुम्भा को महाराजाधिराज, अभिनव भारताचार्य, हिन्दू सुरताण, रायरायन, राणो रासो छापगुरु, दानगुरु, राजगुरु, शैलगुरु आदि के नाग से वर्णित किया गया है। • इसमें मालवा और गुजरात की संयुक्त सेनाओं को कुम्भा द्वारा पराजित किया जाने का वर्णन किया गया है।
रणकपुर प्रशस्ति(1439ई. या वि.सं. 1496), पाली	• 1439 ई में रणकपुर के चौमुखा मंदिर में उत्कीर्ण करवाया गया । • **प्रशस्तिकार** - दैपाक • मेवाड के राजवंश एवं भरणक सेठ के वंश का परिचय मिलता है। • कुम्भा की विजय का वर्णन मिलता है । • बप्पा एवं कालभोज को अलगअलग व्यक्ति बताया - गया है। • गुहिलों को बाप्पा रावल के पुत्र बताया गया है।

जगन्नाथराय प्रशस्ति	• प्रशस्तिकार - कृष्णभट्ट • इसकी लिपि देवनागरी और भाषा संस्कृत है • इसमें बापा रावल से लेकर जगतसिंह सिसोदिया तक गुहिलों का वर्णन है। • यह उदयपुर के जगन्नाथ राय मंदिर में स्थित है। • प्रताप के समय लडे गए हल्दीघाटी के युद्ध का वर्णन किया गया है। • प्रशस्ति के अनुसार महाराणा ने पिछोला के तालाब में मोहन मंदिर बनवाया और रूपसागर तालाब का निर्माण करवाया।
श्रृंगी ऋषि का शिलालेख (1428ई. उदयपुर)	• इसे 1428 ईमें उत्कीर्ण . करवाया गया। • यह लेख मोकल के समय का है। • मोकल द्वारा कुण्ड बनाने और उसके वंश का वर्णन किया गया है। • रचनाकार कविराज वाणी बिलारा योगेश्वर • भाषा- संस्कृत

अभिलेख एवं प्रशस्तियाँ

नाम	स्थान	काल	विवरण
बरली का शिलालेख	अजमेर (भिलोट माता के मन्दिर से)	दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व	• राजस्थान का प्राचीनतम शिलालेख • ब्राह्मी लिपि • वर्तमान में अजमेर संग्राहलय में सुरक्षित है
नान्दसा यूप स्तम्भ लेख	भीलवाड़ा	225 ई.	• सोम द्वारा स्थापना
बड़वा यूप अभिलेख	कोटा (बडवा गाँव में)	238-39 वि.सं./ 181 ई. में	• भाषा संस्कृत एवं लिपि ब्राह्मी उत्तरी है । • मौखरी राजाओं का वर्णन मिलता है सबसे पुराना और पहला अभिलेख । • तीन यूप (स्तंभ)पर उत्कीर्ण है ।
भ्रमरमाता का लेख	चित्तौड़	490 ई.	• गौरवंश और औलिकरवंश के शासकों का वर्णन मिलता है • रचयिता - मित्रसोम का पुत्र ब्रह्मसोम • लेखक - पूर्वा
कणसवा अभिलेख	कोटा	738 ई.	• मौर्य वंशी राजा धवल का उल्लेख (शायद राजस्थान का अंतिम मौर्य शासक)
ग्वालियर प्रशस्ति		880 ई.	• मिहिरभोज प्रथम की देंन • संस्कृत एवं ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण • लेखक – भट्टधनिक का पुत्र बालादित्य • गुर्जर प्रतिहारों के वंशावलियों एवं उपलब्धियों का उल्लेख मिलता है
प्रतापगढ़ अभिलेख	प्रतापगढ़	946 ई.	• गुर्जर प्रतिहार नरेश महेन्द्रपाल की उपलब्धियों का

			वर्णन है।
अचलेश्वर प्रशस्ति	आबू		• इसमें पुरुष के अग्निकुंड से उत्पन्न होने का उल्लेख है। • परमारों का मूल पुरुष धूमराज होने का वर्णन है ।
लूणवसही की प्रशस्ति	आबू-देलवाड़ा	1230 ई.	• भाषा - संस्कृत • इसमें आबू के परमार शासकों और वास्तुपाल तेजपाल के वंश का वर्णन है
नेमीनाथ की प्रशस्ति	आबू	1230 ई.	• रचयिता - सोमेश्वरदेव (शुभचन्द्र) • इसे सूत्रधार चण्डेश्वर ने खोदा था ।
रसिया की छतरी का लेख	चित्तौड़गढ़	1331	• रचयिता - प्रियपटु के पुत्र नागर जाति के ब्राह्मण वेद शर्मा • उत्कीर्णकर्ता - सूत्रधार सज्जन • इसमें गुहिल को बापा का पुत्र बताया गया है।
माचेड़ी की बावली का दूसरा शिलालेख	अलवर	1458 ई.	• इसमें अलवर में बड़ गुर्जर वंशी रजपालदेव राज्य पर अधिकार होने का वर्णन है ।
बरबथ का लेख	बयाना	1613-14 ई.	• इसमें अकबर की पत्नी मरियम उस -ज़मानी के द्वारा बरबथ में एक बाग़ और बावड़ी का निर्माण करने का उल्लेख बड़ है।
बर्नाला यूप स्तम्भ लेख	जयपुर	227 ई.	
चाटसू अभिलेख	जयपुर	813 ई.	• गुहिल वंशीय भरत्रभट्ट और उसके वंशजो का वर्णन है। • सूत्रधार – देइआ
बुचकला अभिलेख	जोधपुर(बिलाडा)	815 ई.	• वत्सराज के पुत्र नागभट्ट प्रतिहार का उल्लेख है ।
राजौरगढ़ अभिलेख	अलवर	960 ई.	• मथनदेव प्रतिहार
हर्ष अभिलेख	सीकर	973 ई.	• चौहानों के वंशक्रम का उल्लेख । • हर्षनाथ (सीकर) मंदिर का निर्माण अल्लट द्वारा करवाये जाने का उल्लेख । • वागड़ को वार्गट कहा गया
रसिया की छतरी का शिलालेख	चित्तोडगढ	1274 ई.	• गुहील वंशीय शाशकों की जानकारी (बाप्पा से नरवर्मा तक) • रचनाकार- प्रियपटु के पुत्र वेद शर्मा
डूंगरपुर की प्रशस्ति	डूंगरपुर	1404 ईं	• उपरगाँव (डूंगरपुर) में में संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण । • वागड के राजवंशों के इतिहास का वर्णन।

सिक्के

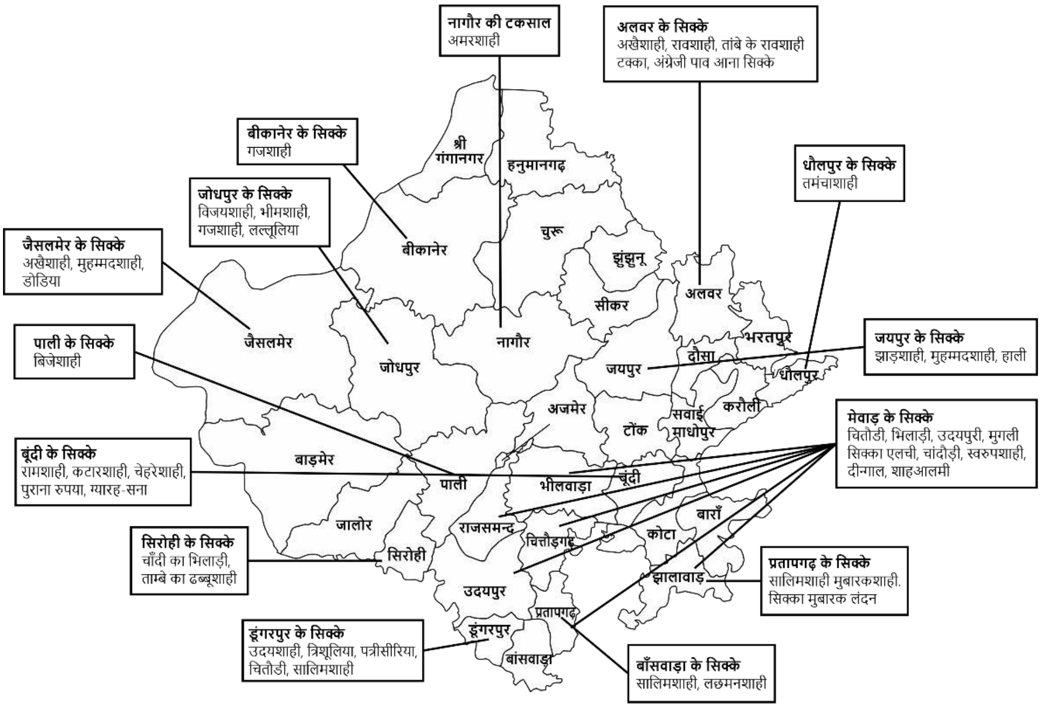

सिक्को का अध्ययन - न्यूमिसमेटिक्स

- भारतीय इतिहास, सिंधु घाटी सभ्यता और वैदिक सभ्यता में सिक्को का व्यापार - **वस्तु विनियम पर आधारित।**
- **सर्वप्रथम सिक्को का प्रचलन** - 2500 वर्ष पूर्व
    - मुद्राएँ उत्खनन के दौरान **खण्डित अवस्था** में प्राप्त।
    - **विशेष चिन्ह** बने हुए है - अतः इन्हें **आहत मुद्राएँ/ पंचमार्क सिक्के** भी कहते है।
    - वर्गाकार, आयाताकार व वृत्ताकार रूप में है।
- **कौटिल्य के अर्थशास्त्र** - सिक्को को **पण/ कार्षापण की संज्ञा** - अधिकांशतः चाँदी धातु के।
- **सर्वप्रथम राजस्थान** के **चौहान वंश** ने मुद्राएँ जारी की।
    - **ताँबे के सिक्के -** द्रम्म और विशोपक
    - **चाँदी के सिक्के** - रूपक
    - **सोने के सिक्के** - दीनार
- मेवाड़ में प्रचलित सिक्के –
    - **ताम्बे के सिक्के-** ढिंगला, भिलाडी. त्रिशुलिया, भिन्डीरिया ,नाथद्वारिया
    - **चांदी के** सिक्के- द्रम्म , रूपक
- अकबर ने राजस्थान में **सिक्का एलची** जारी किया।(चित्तोड़ विजय के बाद)
    - **अकबर** के **आमेर** से **अच्छे संबंध** थे।
        - अतः वहाँ **सर्वप्रथम टकसाल** खोलने की अनुमति दी गई।
- **राजस्थान के प्राचीन सिक्के**
- अंग्रेजों के समय जारी **मुद्राओं में कलदार** (चाँदी) **सर्वाधिक प्रसिद्ध**

महत्वपूर्ण तथ्य

- तत्कालीन राजपूताना की रियासतो के सिक्कों के विषय पर केब ने 1893 ई. मैं "द करेंसी ऑफ द हिंदू स्टेट ऑफ राजपूताना" नामक पुस्तक लिखी।
- रैढ़ (टोंक) की खुदाई से 3075 चांदी के पंचमार्क सिक्के मिले हैं जो भारत के प्राचीनतम सिक्के हैं और एक ही स्थान से मिले सिक्कों की सबसे बड़ी संख्या है।
    - इन सिक्कों को धरण या पण कहा जाता था।
- रंगमहल (हनुमानगढ़) से आहत मुद्रा एवं कुषाण कालीन मुद्राएं मिली है।
    - कुषाण कालीन शिक्षकों को मुरण्ड़ा कहा गया है और यहां से प्रथम कुषाण कनिष्क का सिक्का भी मिला है।
- बैराठ सभ्यता (जयपुर) से भी अनेक मुद्राएं मिली है जिनमें से 16 मुद्राएं प्रसिद्ध यूनानी शासक मिनेण्डर की है।

*** RAS Pre 2018**

- इंड़ो - सासानी सिक्कों की भारतीयों ने गधिया नाम से पहचान की है जो चांदी और ताम्र धातु होते बने हुए होते थे।
- मेवाड़ के स्वरूपशाही और मारवाड़ के आलमशाही सिक्के ब्रिटिश प्रभाव वाले थे जिनमें "औरंग आराम हिंद एवं इंग्लिस्तान क्वीन विक्टोरिया" लिखा होता था।
- राजस्थान में सर्वप्रथम 1900 ई. में स्थानीय सिक्कों के स्थान पर कलदार का चालान जारी हुआ।

रियासत	**सिक्के**
बीकानेर	गजशाही सिक्के (चाँदी)
जैसलमेर	मुहम्मदशाही, अखैशाही, डोडिया (ताँबा)
उदयपुर	स्वरूपशाही, चांदोडी, शाहआलमशाही, ढीगाल , त्रिशुलियां, भिलाडी, कर्षापण, भीड़रिया, पदमशाही
डूँगरपुर	उदयशाही, त्रिशूलिया, पत्रिसीरिया, चित्तौडी, सालिमशाही सिक्का
बाँसवाड़ा	सालिमशाही सिक्का , लक्ष्मणशाही
प्रतापगढ	सालिमशाही, मुबारकशाही, सिक्का मुबारक, लंदन सिक्का
शाहपुरा	संदिया, मधेशाही, चित्तौडी, भिलाड़ी सिक्का
कोटा	गुमानशाही, हाली, मदनशाही सिक्के
झालावाड	पुराने और नए मदनशाही सिक्के
करौली	माणकशाही
धौलपुर	तमंचाशाही सिक्का
भरतपुर	शाहआलमा
अलवर	अखैशाही, रावशाही सिक्के , ताँबे के रावशाही सिक्का, अंग्रेजी पाव आना सिक्का
जयपुर	झाड़शाही, मुहम्मदशाही, हाली
जोधपुर	विजयशाही, भीमशाही, गदिया, गजशाही , लल्लूलिया रूपया
सोजत	लल्लूलिया (पाली) एवं लाल्लुशाही सिक्के
सलूम्बर	पदमशाही (ताम्रमुद्रा)
किशनगढ़	शाहआलमी
बूँदी	रामशाही सिक्का ग्यारह- सना, कटारशाही,चेहरेशाही, पुराना रुपया
नागौर की टकसाल	अमरशाही, कुचामनिया सिक्का (कुचामन टकसाल) इसे **इक्तिसंदा, बोपुशाही , बोरसी** भी कहते है
पाली	बिजैशाही
सिरोही	चाँदी की भिलाड़ी , ताँबे का ढब्बूशाही
सलूम्बर	पदमशाही

ताम्रपत्र

राजस्थान के प्रमुख ताम्र पत्र

ताम्र पत्र	काल	के बारे में
धुलेव का दान पत्र	679 ई.	• किष्किंधा (कल्याणपुर) के महाराज भेटी ने अपने महामात्र आदि अधिकारियों को आज्ञा दी और उन्हें सूचित किया कि उन्होंने महाराज बप्पदन्ति के श्रेयार्थ और धर्मार्थ उबारक नामक गाँव को भट्टीनाग नामक ब्राह्मण को दान में दिया था।
ब्रोच गुर्जर ताम्रपात्र	978 ई.	• गुर्जर वंश के सप्तसैंधव भारत से लेकर गंगा कावेरी तक के अभियान का वर्णन। • इसके आधार पर कनिंघम ने राजपूतों को कुषाणों की यू-ए-ची जाति माना।
मथनदेव का ताम्र-पत्र	959 ई.	• मंदिर के लिए भूमि दान की व्यवस्था का उल्लेख है।
वीरपुर का दान पत्र	1185 ई.	• इसमें गुजरात के चालुक्य राजा भीमदेव के सामंत वागड़ के गुहिल वंशीय राजा अमृतपालदेव के सूर्यपर्व पर भूमिदान देने का उल्लेख है।
आहड़ ताम्र-पत्र	1206 ई.	• गुजरात के सोलंकी राजा भीमदेव (द्वितीय) का है। • गुजरात के मूलराज से भीमदेव द्वितीय तक सोलंकी राजाओं की वंशावली दी गई है ।
पारसोली का ताम्र-पत्र	1473 ई.	• महाराणा रायमल के समय का है। • भूमि की किस्मों का उल्लेख – पीवल, गोरमो, माल, मगरा । ○ यह भूमि उस समय की सभी लागतों से मुक्त थीं।
खेरादा ताम्र-पत्र	1437 ई.	• महाराणा कुंभा के समय का है। • शंभू को 400 टके (मुद्रा) के दान का उल्लेख है। • एकलिंगजी में राणा कुंभा द्वारा किए गए प्रायश्चित, उस समय का दान, धार्मिक स्थिति की जानकारी मिलती है।
चीकली ताम्र-पत्र	1483 ई.	• किसानों से एकत्र किए जाने वाले 'विविध लाग-बागों' को दर्शाता है। • पटेल, सुथार और ब्राह्मणों द्वारा खेती का वर्णन।
ढोल का ताम्र-पत्र	1574 ई.	• महाराणा प्रताप के समय का है जब उन्होंने ढोल नामक एक गाँव की सैन्य चौकी का प्रबंधन किया था और अपने प्रबंधक जोशी पुणो को ढोल में भूमि अनुदान दिया।
ठीकरा गाँव का ताम्र-पत्र	1464 ई.	• गाँव के लिए यहाँ 'मौंजा' शब्द का प्रयोग किया गया है।
पुर का ताम्र-पत्र	1535 ई.	• महाराणा श्री विक्रमादित्य के समय का है। • जौहर में प्रवेश करते समय हाड़ी रानी कर्मवती द्वारा दिए गए भूमि अनुदान के बारे में जानकारी । • जौहर प्रथा पर प्रकाश डालता है - चित्तौड़ के दूसरे साके का सटीक समय बताता है।
कोघाखेड़ी (मेवाड़) का ताम्रपत्र	1713 ई.	• कोघाखेड़ी गाँव का उल्लेख जिसे महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय ने दिनकर भट्ट को हिरण्याशवदान में दिया था।
गाँव पीपली (मेवाड़) का ताम्रपात्र	1576 ई.	• महाराणा प्रतापसिंह के समय का है। • स्पष्ट करता है कि हल्दीघाटी के युद्ध के बाद, महाराणा ने मध्य मेवाड़ के क्षेत्र में लोगों को बसाने का काम शुरू किया। • युद्ध के समय में जिन लोगों को नुकसान उठाना पड़ता था, उन्हें कभी-कभार मदद दी जाती थी।
कीटखेड़ी (प्रतापगढ़)	1650 ई.	• कीटखेड़ी गाँव के भट्ट विश्वनाथ को दान देने से संबंधित है।

का ताम्रपत्र		• राजमाता चौहान द्वारा निर्मित गोवर्धननाथजी के मंदिर की प्रतिष्ठा के समय दिया गया था।
डीगरोल गाँव का ताम्र-पत्र	1648 ई.	• महाराणा जगतसिंह के काल का है।
रंगीली ग्राम (मेवाड़) का ताम्रपत्र	1656 ई.	• महाराणा राजसिंह के समय का है। ○ उन्होंने गंधर्व मोहन को रंगीला नामक गाँव दिया ○ गाँव में खड़, लाकड और टका की लागत को हटा लिया गया ।
बेडवास गाँव का दान पत्र	1643 ई.	• समरसिंह (बांसवाड़ा) के काल का है। • हल भूमि दान का उल्लेख है।
राजसिंह का ताम्रपत्र	1678 ई.	• महाराणा राज सिंह के समय का है।
पारणपुर दान पत्र	1676 ई.	• महाराजा श्री रावत प्रतापसिंह के काल का है। • उस समय के शासक वर्ग के नाम और धार्मिक उद्यापन की परंपरा का उल्लेख है। • टकी, लाग और रखवाली आदि करों का भी वर्णन है।
पाटन्या ग्राम का दान पत्र	1677 ई.	• महारावत प्रतापसिंह (प्रतापगढ़) द्वारा पाटन्या गाँव को महता जयदेव को दान देने का उल्लेख है। • आरंभिक पंक्तियों में गुहिल से लेकर भर्तृभट्ट तक के गुहिल राजाओं के नाम दिए गए हैं।
सखेडी का ताम्रपात्र	1716 ई.	• महारावत गोपाल सिंह के काल का है। • लागत-विलगत के साथ एक स्थानीय कर कथकावल का उल्लेख ।
बेंगू का ताम्रपत्र	1715 ई.	• महाराणा संग्राम सिंह के समय का है।
वरखेड़ी का ताम्रपत्र	1739 ई.	• महारावत गोपाल सिंह के समय का ○ कान्हा के बारे में उल्लेख है कि उन्हें लाख पसाव में वरखेदी गाँव और लखणा की लागत दी गई थी। ○ इसमें 'लाख पसाव' एक इनाम था और लखना की लागत बहुत मायने रखती है।
प्रतापगढ़ का ताम्रपात्र	1817 ई.	• महारावत सामंत सिंह के समय का है। • राज्य में लगे ब्राह्मणों पर 'टंकी' कर को हटाने का उल्लेख
ग्राम गड़बोड़ का ताम्रपात्र	1739 ई.	• महाराणा श्री संग्राम सिंह के समय का।
बाँसवाड़ा के दो दान पत्र	1747 और 1750 ई.	• महारावल पृथ्वी सिंह के समय का है।
बेडवास का ताम्र पत्र	1559 ई.	• उदयपुर बसाने के संवत् 1616 की पुष्टि पर प्रकाश डालता है।
लावा गाँव का ताम्रपत्र	1558 ई.	• महाराणा उदय सिंह ने ब्राह्मण भोला को आदेश दिया कि वह अब भविष्य की लड़कियों की शादी के अवसर पर 'मापा' कर नहीं लेंगे। ○ उस क्षेत्र की लड़कियों का विवाह कराने का उसका अधिकार पूर्ववत रहेगा।`
कुल-पुरोहित का दानपत्र	1459 ई.	इसमें शुभ अवसरों वाले "नेगों" का उल्लेख है।

पुरालेखागारीय स्त्रोत

राज्य अभिलेखागार बीकानेर में निम्नलिखित बहियाँ **संग्रहीत** है:

- **हकीकत बही**- राजा की दिनचर्या का उल्लेख
- **हुकूमत बही** - राजा के आदेशों की नकल
- **कमठाना बही** - भवन व दुर्ग निर्माण संबंधी जानकारी
- **खरीता बही** - पत्राचारों का वर्णन

साहित्यिक स्त्रोत

महत्वपूर्ण तथ्य

- **रास** - 11वीं शताब्दी के आसपास जैन कवियों द्वारा रचा गया ।
- **रासो** - रास के समानांतर राजाश्रय में रासो साहित्य लिखा गया जिसके द्वारा तत्कालीन, ऐतिहासिक,

सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक परिस्थितयों के मूल्यांकन की आधारभूत पृष्ठभूमि निर्मित हुई ।
   - यह राजस्थान की ही देन है ।
- **वेलि** - राजस्थानी वेलि साहित्य में यहाँ के षासकों एवं सामन्तों की वीरता, इतिहास, विद्वता, उदरता, प्रेम-भावना, स्वामिभक्ति, वंषावली आदि घटनाओं का उल्लेख होता है ।
- **ख्यात** - ख्यात का अर्थ होता है ख्याति अर्थात यह किसी राजा महाराजा की प्रशंसा में लिखा गया ग्रंथ ।
   - ख्यात में अतिश्योक्ति में पूर्ण प्रशंसा की जाती है।
   - राजस्थान के इतिहास मे 16 वीं शताब्दी के बाद के इतिहास में ख्यातों का महत्वपुर्ण स्थान है।
   - यह वंशावली व प्रशस्ति लेखन का विस्तृत रुप होता है।
   - ख्यात साहित्य गद्य में लिखा जाता है।

पृथ्वीराज रासो, चन्दबरदाई

- यह ग्रन्थ पृथ्वीराज चौहान के दरबारी कवि चन्दबरदाई द्वारा पिंगल भाषा में लिखा गया जिसे उसके पुत्र जल्हण द्वारा पूरा किया गया।
- इसमें गुर्जर-प्रतिहार, परमार, सोलंकी/ चालुक्य, और चौहानों की गुरु वशिष्ठ, विश्वामित्र आदि के आबू पर्वत के अग्निकुंड से उत्पत्ति का उल्लेख है।
- यह विशेषकर पृथ्वीराज चौहान के इतिहास पर प्रकाश डालता है ।
   - इसमें संयोगिता हरण और तराइन के युद्ध का वर्णन किया गया है।

प्रचलित विरोक्ति
चार बांस चौबीस गज अंगुल अष्ठ प्रमाण, ता ऊपर सुल्तान है मत चुके चौहाण

मुहणोत नैणसी री ख्यात

- यह मारवाड़ी और डिंगल में लिखा गया है।
- नैणसी (1610- 70) जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह प्रथम के दरबारी कवि एवं दीवान थे।
- इसमें समस्त राजपूताने सहित जोधपुर के राठौड़ो का विस्तृत इतिहास लिखा गया है।

नैणसी को मुंशी देवी प्रसाद द्वारा "राजपूताने का अबुल फजल" कहा गया।

मारवाड़ रा परगना री विगत / गावां री ख्यात

- मुहणोत नैणसी द्वारा कृत है।
- बहुत बड़ी होने के कारण इसे "सर्वसंग्रह" भी कहा जाता है।
- इसमें उस समय की आर्थिक और सामाजिक आकड़ो का वर्णन किया गया है और इसी वजह से इसे "राजस्थान का गजैटियर" भी कहा जाता है

बांकीदास री ख्यात / जोधपुर राज्य री ख्यात

- लेखक - बांकीदास (जोधपुर के महाराजा मानसिंह राठौड़ के दरबारी कवि)
- राठौड़ो और अन्य वंशो का विवरण है।
- मारवाड़ी और डिंगल भाषा में लिखी गई है।

दयालदास री ख्यात

- लेखक - दयालदास सिढायच (बीकानेर के महाराज रतनसिंह के दरबारी कवि)
- इसे मारवाड़ी (डिंगल) भाषा में लिखा गया है।
- इसमें बीकानेर के राठौड़ो के प्रारंभ से लेकर महाराजा सरदारसिंह तक का इतिहास लिखा गया है (2 भाग)

मुण्डियार री **(RAS Pre 2013)**

- राव सीहा के द्वारा मारवाड में राठौड़ राज्य की स्थापना से लेकर महाराजा जसवंत सिंह प्रथम तक का वृत्तांत मिलता है।
- इस ख्यात मे यह भी लिखा है कि अकबर के पुत्र सलीम की माँ जोधाबाई मोटाराजा उदयसिंह की दत्तक बहिन थी , जिनकी माता मालदेव की दासी थी।

कवि राजा री ख्यात

- इस ख्यात मे जोधपुर के नरेश महाराजा जसवंत सिंह प्रथम के शासन काल के बारे मे विस्तारपूर्वक बताया गया है।
- इसके अतिरिक्त राव जोधा , रायमल , सूरसिंह के मंत्री भाटी गोबिन्ददास के उपाख्यान भी शामिल है।

किशनगढ़ री ख्यात

- किशनगढ़ के राठौड़ों का इतिहास

भाटियों री ख्यात

- जैसलमेर के भाटियों का इतिहास

राजस्थानी साहित्य	साहित्यकार
पृथ्वीराजरासो	चन्दबरदाई
बीसलदेव रासो	नरपति नाल्ह
हम्मीर रासो	शारंगधर
संगत रासो	गिरधर आंसिया
वेलि क्रिसन रुकमणी री	पृथ्वीराज राठौड़
अचलदास खीची री वचनिका	शिवदास गाडण
पाथल और पीथल	कन्हैया लाल सेठिया
धरती धोरा री	कन्हैया लाल सेठिया
लीलटांस	कन्हैया लाल सेठिया
रूठीराणी, चेतावणी रा चूंगठिया	केसरीसिंह बारहठ

राजस्थानी कहांवता	मुरलीधर व्यास
राजस्थानी शब्दकोष	सीताराम लीलास
नैणसी री ख्यात	मुहणौत नैणसी
मारवाड रा परगाना री विगत	मुहणौत नैणसी
राव रतन री वेलि (बूंदी के राजा रतन सिंह के बारे में)	कल्याण दास
कान्हड़दे प्रबंध	कवि पद्मनाभ (अलाउद्दीन के जालौर आक्रमण का वर्णन)
राव जैतसी रो छंद	बीठू सूजा
राजरूपक	वीरभान
सूरज प्रकाश	करणीदान (जोधपुर महाराजा अभयसिंह के दरबारी कवि)
वंश भास्कर	सूर्यमल्ल मिश्रण

संस्कृत साहित्य	साहित्यकार
पृथ्वीराज विजय	जयानक (कश्मीरी)
हम्मीर महाकाव्य	नयन चन्द्र सूरी
हम्मीर मदमर्दन	जयसिंह सूरी
कुवलयमाला	उद्योतन सूरी
वंश भास्कर /छंद मयूख	सूर्यमल्ल मिश्रण (बूँदी)
नृत्यरत्नकोष	राणा कुंभा

भाषा भूषण	जसवंत सिंह
एकलिंग महात्मय	कुम्भा
ललित विग्रराज	कवि सोमदेव
राजवल्लभ	मण्डन (महाराणा कुम्भा के मुख्य कवि)
राजविनोद	भट्ट सदाशिव
कर्मचन्द्र वंशोत्कीर्त्तकं काव्यम्	जयसोम
अमरसार	पंडित जीवधर
राजरत्नाकर	सदाशिव
अजितोदय	जगजीवन भट्ट (जोधपुर राजा अजीतसिंह के दरबारी कवि)

फारसी साहित्य	साहित्यकार
चचनामा	अली अहमद
मिम्ता-उल-फुतूह	अमीर खुसरो
खजाइन-उल-फुतूह	अमीर खुसरों
तुजुके बाबरी (तुर्की) ,बाबरनामा	बाबर
हुमायूनामा	गुलबदन बेगम
अकबरनामा/आइने अकबरी	अबुल फजल
तुजुके जहाँगीरी	जहाँगीर
तारीख -ए-राजस्थान	कालीराम कायस्थ
वाकीया-ए-राजपूताना	मुंशी ज्वाला सहाय

महत्वपूर्ण ऐतिहासिक युद्ध

वर्ष	युद्ध	के बीच हुआ	परिणाम
1191	तराइन का प्रथम युद्ध	पृथ्वीराज-मोहम्मद गौरी	गौरी की हार हुई
1192	तराइन का द्वितीय युद्ध	पृथ्वीराज-मोहम्मद गौरी	पृथ्वीराज की हार हुई
1301	रणथंभौर का युद्ध	हम्मीरदेव-अलाउद्दीन खिलजी	हम्मीर हार गया
1303	चित्तौड़ का युद्ध	राणा रतन सिंह-अलाउद्दीन खिलजी	राणा रतन सिंह हार गए
1311	सिवाना का युद्ध	सातलदेव चौहान-अलाउद्दीन खिलजी	साहलदेव हार गए
1527	खानवा का युद्ध	राणा सांगा - बाबर	राणा सांगा की हार हुई
1544	सुमेल का युद्ध (जैतारण)	मालदेव-शेरशाह सूरी	मालदेव की हार हुई
1576	हल्दीघाटी का युद्ध	महाराणा प्रताप-अकबर	महाराणा प्रताप हार गए
1582	दिवेर का युद्ध	महाराणा प्रताप, अमर सिंह - मुगल सेना	महाराणा विजयी
1644	मतीरे की राड़	अमरसिंह (नागौर)- कर्णसिंह	अमरसिंह विजयी
1803	लसवारी का युद्ध	दौलत राव सिंधिया-लॉर्ड लेक	सिंधिया की हार हुई

अन्य पुरावशेष

- वेदों में, **सरस्वती नदी** की **वाक्पटुता** और व्यापक रूप से **सराहना** की है।
  - **ऋग्वेद** - प्राचीन **राजस्थान** की "**जीवन रेखा**" ।
  - **मत्स्य** लोगों का भी **उल्लेख** ।
    - **शतपथ ब्राह्मण** - सरस्वती के तट के पास वाले लोग ।
- ब्राह्मण में **सलुवा लोगों** का उल्लेख **मत्स्यों** के साथ एक **जनपद** के रूप में - जिन्होंने अपनी राजधानी **विराट** (जयपुर जिले में वर्तमान बैराठ या विराटनगर) में एक **व्यापक राज्य** विकसित किया।
  - **पांडवों** ने अपने **सहयोगी मत्स्यों** की मदद से विराट में अपने **निर्वासन** की **अवधि** बिताई।
- **महाभारत** - मत्स्य जनपद गौ धन में समृद्ध ; मत्स्य सत्य के लिए प्रसिद्ध था।
  - **मालवों** - महान योद्धाओं की एक जनजाति जिन्होंने कौरवों को पांडवों के खिलाफ उनकी लड़ाई में मदद की।
- **पुराणों** में राजस्थान के **पवित्र स्थान:**
  - **स्कंदपुराण** - भारतीय राज्यों की एक सूची देता है जिसमें राजस्थान के कुछ राज्य शामिल हैं - शाकम्भरा सपादलक्ष; मेवाड़ सपादलक्ष; तोमर सपादलक्ष: वागुरी (बेडेड); विराट (बैराट); और भद्र।
- **चीनी यात्री युआन च्वांग** - पो-ली-ये-ता-लो नामक स्थान का उल्लेख किया है जिसे विराट या बैराट (जयपुर जिला) के समकक्ष माना जाता है।
  - **उनके अनुसार**, "इस शहर के लोग बहादुर और साहसी थे और उनका राजा, जो फी-शी (वैश्य) जाति का था और युद्ध में अपने साहस और कौशल के लिए प्रसिद्ध था।"
- **700-1200 ई. का काल** - साहित्यिक गतिविधि अधिक।
- रचनाओं द्वारा राजस्थान की **राजनीतिक**, **सामाजिक**, **आर्थिक** और **धार्मिक स्थितियों** पर **प्रकाश**।

2 CHAPTER राजस्थान के पुरातात्विक स्थल

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग की स्थापना – अलेक्जेंडर कनिघम (1861)
- राजस्थान में कार्य प्रारम्भ – ए.सी.एल. कार्लाइल (1871)द्वारा सर्वप्रथम दौसा से कठोर पाषाण व मानव अस्थियों की प्राप्ति की सूचना दी
- 1902 में जॉन मार्शल के द्वारा पुनर्गठन किया गया

कालीबंगा(हनुमानगढ़)

- नवपाषाण काल का स्थल
- कार्बन-14 पद्धति के अनुसार इसकी तिथि 2300 ई.पु. मानी जाती है
- प्राचीन दृषद्वती और सरस्वती नदी घाटी के बाएँ तट पर वर्तमान में घग्गर नदी के क्षेत्र में ।
- **सर्वप्रथम खोज** – 1952 ई.
- **खोजकर्ता** – अमलानन्द घोष।
- **उत्खननकर्ता** - बी.के .थापर व बी.बी लाल द्वारा 1961-69 में ।
- **स्थिति** - राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला
- **इतिहासवेत्ता दशरथ शर्मा ने** कालीबंगा को सिन्धुघाटी सभ्यता की तीसरी राजधानी कहा है

<u>साक्ष्य</u>

- विश्व का **सर्वप्रथम जोता हुआ खेत** प्राप्त हुआ है।
  - इसे संस्कृत साहित्य में "बहुधान्यदायक क्षेत्र" भी कहा जाता है।
  - खेत में "ग्रिड पैटर्न" भी देखा गया था।
- **2900 ईसा पूर्व** तक यहाँ एक **विकसित नगर** था।
- **लिपि**- सैन्धव लिपि
- **अंत्येष्टि संस्कार**
  - इस संस्कार की 3 विधियाँ थी।
    - पूर्ण समाधिकरण
    - आंशिक समाधिकरण
    - दाह संस्कार

<u>कालीबंगा से प्राप्त पुरातात्विक सामग्रियाँ</u>

- **ताम्र औजार व मूर्तियाँ**
  - साक्ष्य प्रदान करती है कि मानव प्रस्तर युग से **ताम्रयुग में प्रवेश** कर चुका था।
  - **ताँबे** की **काली चूड़ियों** की वजह से ही इसे **कालीबंगा** कहा गया।
- **मुहरें**
  - सिंधु घाटी (हड़प्पा) सभ्यता की मिट्टी पर बनी **मुहरें प्राप्त**
- **वृषभ** व **अन्य पशुओं** के चित्र
- **सैन्धव लिपि** में **अंकित लेख** है - अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।
  - दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।
  - **तौलने के बाट**
    - पत्थर से बने **तोलने के बाट** का उपयोग करना मानव सीख गया था।
  - **बर्तन**
    - मिट्टी के विभिन्न प्रकार के **छोटे-बड़े बर्तन** भी प्राप्त जिन पर **चित्रांकन** भी किया हुआ है।
    - बर्तन बनाने हेतु **'चारु' का प्रयोग** होने लगा था ।
  - **आभूषण**
    - **स्त्री व पुरुषों** द्वारा **प्रयुक्त** होने वाले काँच, सीप, शंख, घोंघों आदि से निर्मित आभूषण प्राप्त
    - **उदाहरण** - कंगन, चूड़ियाँ आदि।
  - **नगर नियोजन**
    - सूर्य से **तपी हुई ईटों** से बने मकान
    - **दरवाज़े**
    - पाँच से साढ़े पांच मीटर चौड़ी एवं **समकोण पर काटती सड़कें**
    - **कुएँ, नालियाँ** आदि **पूर्व योजना** के अनुसार निर्मित।
    - मोहनजोदडो के विपरीत **घर कच्ची ईंटो** के बने थे।
  - **कृषि-कार्य संबंधी अवशेष**
    - गेहूँ एवं जौ का प्रयोग करते थे
    - **कपास** की **खेती** के अवशेष प्राप्त
    - **मिश्रित खेती** (चना व सरसो) के साक्ष्य।
    - **हल** से अंकित **रेखाएँ** भी प्राप्त जो यह सिद्ध करती हैं कि यहाँ का **मानव कृषि कार्य** भी करता था।
  - पुष्टि **बैल** व अन्य पालतू **पशुओं** की **मूर्तियों** से भी होती हैं
    - **बैल** व **बारहसिंघा** की **अस्थियाँ** भी प्राप्त हुई।
    - **बैलगाड़ी** के **खिलौने** प्राप्त हुए।

- **खिलौने**
  - लकड़ी,धातु व मिट्टी आदि के खिलौने भी मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की भाँति यहाँ से प्राप्त हुए हैं जो **बच्चों** के **मनोरंजन** के प्रति **आकर्षण** प्रकट करते हैं।
- **धर्म संबंधी अवशेष**
  - मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की भाँति कालीबंगा से **मातृदेवी की मूर्ति नहीं मिली।**

- **आयताकार** व **अंडाकार** सात **अग्निवेदियाँ** तथा बैल, बारहसिंघे की हड्डियाँ प्राप्त हुई।
  - यह साक्ष्य देता है कि मानव **यज्ञ** में **पशु-बलि** भी दिया करते थे।
  - **दुर्ग (किला)**
    - अन्य केन्द्रो से भिन्न एक **विशाल दुर्ग** के **अवशेष** भी प्राप्त हुए।
    - मानव द्वारा अपनाए गए **सुरक्षात्मक उपायों** का **प्रमाण** है।

- कालीबंगा में कोई स्पष्ट घरेलु या शेहरी जल निकास प्रणाली नहीं थी।
  - केवल लकड़ी की नाली के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- छेद किए हुए किवाड़ और सिंध क्षेत्र के बाहर मुद्रा पर **व्याघ्र का अंकन एकमात्र** इसी स्थान से मिले है।
- कालीबंगा से एक बच्चे की खोपड़ी में 6 छेद किये जाने का प्रमाण मिला है।
  - शल्य क्रिया का प्राचीनतम उदाहरण" ।
- 2600 ई.पू. में आये "भूकंप का सबसे प्राचीनतम साक्ष्य मिला है।

रंगमहल (हनुमानगढ़)

- हनुमानगढ़ जिले में **सरस्वती नदी** / **घग्गर नदी** के निकट स्थित हैं।
- **प्रस्तरयुगीन और धातुयुगीन** सभ्यता है।
- **उत्खनन**- डॉ. हन्नारिड के निर्देशन में एक स्वीडिश कंपनी द्वारा वर्ष 1952-54 में किया गया।
- **कुषाणकालीन** व उससे पहले की **105 ताँबे की मुद्राएँ** प्राप्त हुई।
- ब्राह्मी लिपि ने नाम से अंकित **2 कांस्य मुहरें** प्राप्त
- मुख्य रूप से **चावल** की **खेती**
- **मकानों** का **निर्माण ईंटो** से हुआ।
- **मृद्भांड** - लाल व गुलाबी रंग के
  - चाक से बने, पतले व चिकने होते थे।
- **गुरु** - शिष्य मृदा मूर्ति मिली।
  - **कुषाण कालीन** सभ्यता के सामान मिले।

आहड सभ्यता (उदयपुर)

- प्राचीन शिलालेखों में आहड़ का पुराना नाम "ताम्रवती" अंकित है।
- 10वीं और 11वीं शताब्दी में इसे "आघाटपुर/ आघाट दुर्ग" या "धूलकोट" या "ताम्रवती नगरी", "ताम्बावली" कहा जाता था।
- बनास की सहायक आयड/ बेड़च नदी के तट पर स्थित है।
- इसे ताम्र नगरी भी कहा जाता है
- **अवधि** – 1900 ईसा पूर्व से 1200 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में
- **काल** – ताम्र पाषाण काल (बनास संस्कृति)
- **प्रथम उत्खनन कार्य** – 1953 में अक्षय कीर्ति व्यास की अध्यक्षता में।
- **अन्य उत्खननकर्ता** – 1953-1956 में आर. सी. अग्रवाल (रत्नचन्द्र अग्रवाल) तथा उसके बाद एच.डी.(हंसमुख धीरजलाल) सांकलिया
- इस संस्कृति में लघु पाषाण उपकरणों का सम्पूर्ण अभाव है।

विशेषताएँ

- **प्रमुख उद्योग** - ताँबा गलाना और उसके उपकरण बनाना
  - ताम्बे की खदाने निकट ही स्थित है।
  - ताँबा (धातु) गलाने की एक भट्टी भी प्राप्त
- आहड़ सभ्यता के लोग चांदी से परिचित नहीं थे
- निवासी **शवों** को उनके **आभूषणों के साथ दफनाते** थे।
- **माप तोल** के बाट प्राप्त
  - वाणिज्य के साक्ष्य
- लाल व काले **मृद्भाण्ड** का प्रयोग किया जाता था।
  - **मृद्भाण्ड उल्टी तिपाई विधि** से बनाये गए है।
- **बनास नदी सभ्यता** का एक **मुख्य हिस्सा**
  - इसलिए इसे **बनास संस्कृति** भी कहते हैं।

गोरे व कोठ

- आहड़ सभ्यता में पाए गए अनाज रखने के बड़े मृदभांड|

आहड़ में पाए जाने वाली मुद्राएं

- ताम्बे की 6 यूनानी मुद्राएं और 3 मुहरें
  - एक मुद्रा पर 1 त्रिशूल और दूसरी और अपोलो देवता अंकित है जिसके हाथ में तीर और तरकश है।

"बनासियन बुल"

- आहड़ से मिली टेराकोटा वृषभ आकृतियाँ।

धर्मा संस्कृति

- राजसमन्द में गिलुण्ड से आहड़ की समान धर्मा संस्कृति मिली है ।
- अंतर आहड़ में पक्की ईटों का प्रयोग नही होता था जबकि गिलुण्ड में इनका प्रचुर उपयोग होता था।

प्राप्त वस्तुएँ

- मकानों की **नींवो** में **पत्थरों** का प्रयोग
- **ताँबा गलाने** की **भट्टियाँ**

- कपड़े की छपाई हेतु **लकडी** के बने **ठप्पे**
- **ईरानी शैली** के छोटे **हत्थेदार बर्तन(लेपिस लाजुली)**
- **हड्डी** का **चाकू**
- **सिर खुजलाने** का **यंत्र**
- मिट्टी का **तवा**
- **सुराही**
- एक मकान में **7 चूल्हे** एक पंक्ति में
- टेराकोटा निर्मित **2 स्त्री धड़**

बैराठ सभ्यता

- बैराठ बाणगंगा नदी के किनारे **वर्तमान जयपुर** जिले के **शाहपुरा उपखंड** में स्थित है।
- **लौहयुगीन** सभ्यता है।
- **प्राचीन नाम**- विराटनगर ।
  - **मत्स्य महाजनपद** की **राजधानी।**
- **खोजकर्ता** - 1837 में कैप्टन बर्ट।
- **उत्खननकर्ता**- 1936-37 में दयाराम साहनी, 1962-63 में नीलरतन बनर्जी तथा कैलाशनाथ दीक्षित।
- 1837 में **कैप्टन** बर्ट ने बीजक की पहाड़ी से अशोक के **प्रथम भाब्रू शिलालेख** की खोज की गई थी**।**

> **बैराठ का पुरातात्विक महत्त्व**
> **तीन पहाड़ियाँ सर्वप्रमुख** - पाषाण ताम्र पाषाण लौहयुगीन सामग्री अशोक का खंडित शिलालेख शंख लिपि के प्रमाण बौध विहार बाँध चेत्य के अवशेष आहत मुद्राएँ, यूनानी मुद्राएँ, भारत में द्वितीय नागरीकरण आदि के विस्तृत साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

- **पुरातत्व** के महत्व की **तीन पहाड़ियाँ**:
  - बीज़क डूँगरी- बोद्ध विहार के अवशेष मिले
  - भीम डूँगरी
  - महादेव डूँगरी
- **36 मुद्राएँ प्राप्त** - 8 चांदी के पंचमार्क सिक्के, 28 इंडो-ग्रीक (जिसमें 16 मुद्राएँ मीनेन्रडर)यूनानी मुद्राएँ
- **चमकीले मृद्भांड** वाली संस्कृति
- बौद्ध धर्म के **हीनयान सम्प्रदाय** से संबंधित गोल बौद्ध मंदिर, स्तूप एवं बौद्ध मठ के अवशेष।
- **पूर्णत**: **ग्रामीण** संस्कृति थी।
- भवन निर्माण के लिए **मिट्टी की ईंटो** का **अत्यधिक प्रयोग।**
- माना जाता है कि इसकी **समाप्ति हूण शासक मिहिरकुल** द्वारा की गई।
- महाभारत काल , महाजनपद काल , मौर्य काल , गुप्त काल, हर्ष काल आदि की जानकारी मिलती है।

> - बैराठ से बड़ी मात्रा में शैल चित्र प्राप्त होने के कारण बैराठ को प्राचीन युग की चित्रशाला कहा जाता है।
> - उत्तर भारतीय काले चमकदार मृद्भांड वाली संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाली संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले स्थलों मैं राजस्थान में सबसे महत्वपूर्ण प्राचीन स्थल विराटनगर है।
> - रहस्यमयी "शंख लिपि के प्रचुर संख्या में प्रमाण प्राप्त हुए हैं ।

गणेश्वर (सीकर)

- प्राक-हड्डपा, हड्डपाकालीन एवं ताम्रयुगीन स्थल
- **नीम-का-थाना** तहसील में **कान्तली नदी** के किनारे स्थित है।
- **2800 ईसा पूर्व** में विकसित।
- गणेश्वर सभ्यता - "**पुरातत्व का पुष्कर**"।
- ताम्रयुगीन संस्कृति का **प्रचुर भंडार प्राप्त** ।
  - इसीलिए "**ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी" / ताम्र संचयी संस्कृति** कहा जाता है।
- **उत्खनन** - 1977 में आर. सी. अग्रवाल के नेतृत्व में ।
- **मृद्भांड** - कपीशवर्णी मृद्पात्र।
- **वृहदाकार पत्थर** के बाँध का प्रमाण।
- **मकान पत्थर के** बनाए गए थे।
  - **ईंटो** के उपयोग का कोई **प्रमाण नही** ।
- ताँबे का **बाण** और **मछली** पकड़ने का **काँटा** प्राप्त हुआ।

बागोर सभ्यता(भीलवाड़ा)

- भीलवाड़ा के निकट **कोठारी नदी** के किनारे स्थित।
- **पाषाणकालीन सभ्यता** स्थल है।
- **उत्खननकर्ता** – 1967-68 में डॉ. वीरेन्द्रनाथ मिश्र, डॉ. एल.एस .लेश्निक
- **मुख्य उत्खनन स्थल -** महासतियों का टीला
- "**आदिम संस्कृति का संग्रहालय**" माना जाता है

साक्ष्य

- **14 प्रकार** की **कृषि** के अवशेष मिले है।
- **मुख्य कार्य** - कृष, पशुपालन व आखेट
  - **कृषि** व **पशुपालन** के **प्राचीनतम** साक्ष्य मिले।
- **पाँच मानव कंकाल प्राप्त -** जो सुनियोजित ढंग से दफ़नाए गये थे।
- **पाषाण** युग की **सर्वाधिक** सामग्री प्राप्त ।
  - **मुख्य उपकरण**- ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपर, चंद्रिक
  - इसके **अतिरिक्त** तक्षणी, खुरचनी, तथा बेधक भी बड़ी मात्रा में प्राप्त ।
- मानव **संगठित सामाजिक जीवन** से **दूर।**
- **फर्श** बनाने के लिए **पत्थर** लाये गये थे और यहाँ **फूस** के **वातरोधी पर्दे** भी बनाये गये।
- **उद्योग** - बहुत ही छोटी-**छोटी वस्तुओं** का **निर्माण** और **ज्यामितीय प्रारूपों** की दृष्टि से अत्यंत **उन्नत** ।

सुनारी सभ्यता (झुंझुनू)

- यह लोहयुगिन सभ्यता है
- झुँझुँनू की **खेतड़ी तहसील** में **कान्तली नदी** के किनारे स्थित ।
- **उत्खनन**- 1980-81 में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा।
- **लोहा गलाने** की **प्राचीनतम भट्टियाँ** प्राप्त ।
- स्लेटी रंग के **मृदभांड प्राप्त** ।

- मौर्यकालीन सभ्यता के **अवशेष** जिनमें **काली पॉलिश** युक्त **मृदपात्र** है।
- मातृदेवी की **मृण्मूतियाँ** तथा **धान संग्रहण** का **कोठा** भी प्राप्त ।
- **शुंग** तथा **कुषाणकालीन अवशेष** भी प्राप्त ।
- **निवासी चावल** का **प्रयोग** करते थे तथा घोड़ों से रथ खींचते थे।
- लोहे के तीर, भाले के अग्रभाग, लोहे का कटोरा तथा कृष्ण परिमार्जित मुदपात्र भी मिले हैं।

रैढ़ सभ्यता

- लौह युगीन सभ्यता
- टोंक जिले की **निवाई तहसील** में **ढील नदी** के किनारे स्थित।
- **इसे प्राचीन राजस्थान का टाटानगर** कहा जाता है।
- **उत्खननकर्ता** - 1938-39 में दयाराम साहनी और उसके बाद डॉ. **केदारनाथ पूरी** द्वारा।
- **3075 आहत मुद्राएँ** तथा **300 मालव जनपद** के **सिक्के** प्राप्त।
  - यूनानी शासक **अपोलोडोट्स** का एक **खंडित सिक्का** भी प्राप्त हुआ।
- **मृद्धांड चाक** से **निर्मित** मात्रदेवी व शक्ति की मूर्तियों के अवशेष भी प्राप्त।
- **विभिन्न आभूषण** - कर्णफूल, हार, पायल आदि।
- **आलीशान इमारतों** के अवशेष।
- **एशिया** का अब तक का **सबसे बड़ा सिक्को का भण्डार।**

नगर सभ्यता - खेड़ा सभ्यता

- लौह्युगीन सभ्यता
- **टोंक** जिले में उणियारा कस्बे के पास स्थित है।
- **अन्य नाम** -कर्कोट नगर, **मालव नगर।**
- **उत्खननकर्ता**- 1942-43 में श्रीकृष्ण देव द्वारा ।
- **खोज**-
  - बड़ी संख्या में मालव सिक्के तथा आहत मुद्राएं प्राप्त ।
  - मृदभांडो के अधिकतर अवशेषों का रंग लाल है।
  - उत्खनन से गुप्तोत्तर काल की स्लेटी पत्थर से निर्मित महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति प्राप्त।
  - मोदक रूप में गणेश का अंकन
  - फणधारी नाग का अंकन
  - कमल धारण किए लक्ष्मी की खड़ी प्रतिमा
- वर्तमान में **खेडा सभ्यता** के नाम से जाना जाता है।
- लाल रंग के **मृदभाड़** एवं **अनाज** भरने के **कलात्मक मटकों** के **अवशेष** प्राप्त ।

महत्वपूर्ण स्थल

गिलुण्ड सभ्यता	• **राजसमंद** जिले में **बनास नदी** के तट पर स्थित। • **ग्रामीण** संस्कृति थी। • 1957-58 में प्रो.बी.बी. लाल ने गिलुण्ड पुरास्थल के 2 टीलों (स्थानीय रूप से मोडिया मगरी कहा जाता है) का उत्खनन किया। • **महत्वपूर्ण स्थल** - बनास व आहड़ ○ इसलिए इसे **ताम्रयुगीन सभ्यता** कहते है ।

बालाथल	• **उदयपुर** (राजस्थान) नगर से 42 किमी दक्षिण-पूर्व में वल्लभनगर तहसील में स्थित।
	• 3200 ई. पू. में अस्तित्व में आया।
	• **नदी** - बेडच
	• **खोजकर्ता** - 1962-63 में वी .एन .मिश्र द्वारा
	• लोगों ने **पत्थर** और **मिट्टी** की **ईंटों** के बड़े-बड़े मकान बनाये ।
	  ○ 11 कमरों के विशाल भवन के अवशेष।
	  ○ अन्य ताम्रपाषाणयुगीन स्थलों पर केवल मिट्टी के छोटे मकानों के ही प्रमाण।
	• यहाँ से 4000 वर्ष पुराना एक कंकाल मिला है जिसे "**भारत में कुष्ठ रोग का सबसे पुरातन प्रमाण**" माना जाता है।
	• पूर्वी छोर पर लगभग **5 एकड़** क्षेत्र में फैला एक बड़ा **टीला** है।
	• **मृद्धाण्ड**
	  ○ **2 प्रकार** के विशेष आकार प्रकार के **चमकदार** मृद्धाण्ड मिले हैं - एक खुरदरी दीवारों वाले तथा दूसरे चिकनी मिटटी की दीवारों वाले।
	  ○ परिष्कृत मृद्धाण्डों में **प्यालियाँ** और **कटोरियाँ** शामिल हैं।
	• **परवर्ती हड़प्पायुगीन** लौह औजार **प्रधूर मात्रा** में पाये गये ।
	  ○ **लोहा गलाने** की **भट्टियाँ** भी प्राप्त हुई।
	• **योगी** मुद्रा में **शवाधान** किया जाता था।
	• लोग **कृषि**, **आखेट** तथा **पशुपालन** में लिप्त थे।